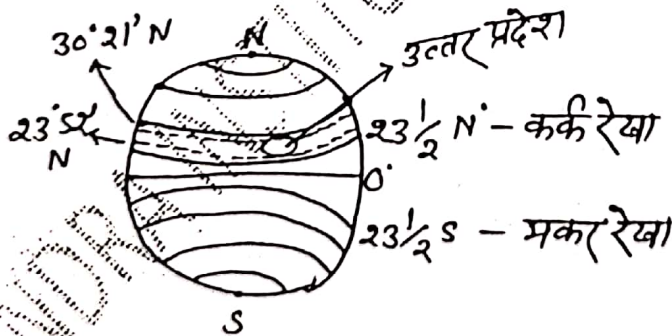


Syllabus

- भौगोलिक स्थिति
- सामान्य परिचय
- नदी, जलवायु, मृदा, कृषि
- मेले, महोत्सव, उद्योग, पर्यटन स्थल
- उत्तर प्रदेश कला व संस्कृति
- जनजातियाँ, परिवहन तन्त्र
- जनगणना २०११
- वन्य जीव / पक्षी जीव विद्यार
- सिंचाई

उत्तर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति

- उत्तर प्रदेश प्राचीनतम गोडवाना लैंड का एक भू-भाग है। जो आज से करोड़ों वर्ष पूर्व दक्षिण गोलार्ध में स्थित है। जबकि महाद्वीपों के विभाजन के पश्चात् हमारा भारत उत्तरी गोलार्ध में स्थित हो गया है।



→ उत्तर प्रदेश का अक्षांशीय विस्तार =

२३°५२'N से प्रारम्भ होकर ३०°२१'N तक फैला हुआ है।

→ उत्तर प्रदेश का देशान्तरीय विस्तार =

हमारा उ०प्र० उत्तरी गोलार्ध या पूर्वी देशान्तरीय रेखाओं पर फैला हुआ है जिसका विस्तार ७७°३'E से ८५°३९'E तक है।

राज्य व सीमावर्ती प्रदेश =

1. हिमांचल प्रदेश - सहारनपुर

2. झारखण्ड - सोनभद्र

3. दिल्ली - सोनभद्र

4. राजस्थान - आगरा + मथुरा

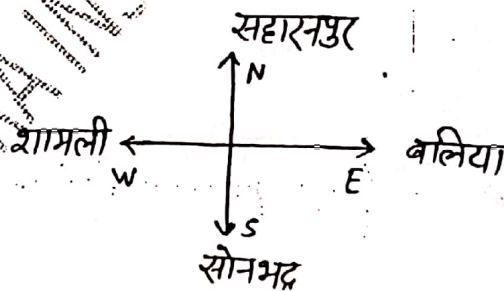
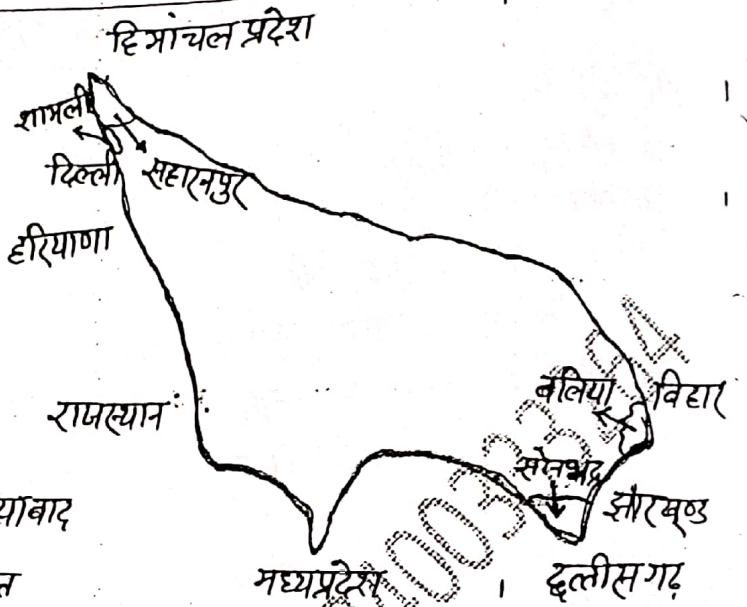
5. दिल्ली - गौतम बुद्ध नगर तथा गाजियाबाद

6. हरियाणा - सहारनपुर, शामली, बागपत
गौतम बुद्ध नगर, अलीगढ़, मथुरा

7. बिहार - सोनभद्र, चंदौली, गाजीपुर, देवरिया, बलिया
कुशीनगर, महाराजगंज

8. उत्तराखण्ड - सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत

9. मध्य प्रदेश - सोनभद्र, चित्तूर, मधोबा, आगरा, इटावा, जालौन, ललितपुर
(11) प्रयागराज, मिर्जापुर, बांदा, झांसी



→ उत्तर प्रदेश पूर्व से पश्चिम तक 650 Km तक तथा उत्तर से दक्षिण 240 Km तक फैला हुआ है।

→ उत्तर प्रदेश का कुल क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल का 7.33 % है।

→ उ० प्र० का कुल क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग कि०मी० है।

→ सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले जिले - 1. लखीमपुर खीरी

2. सोनभद्र

3. हरदोई

- न्यूनतम क्षेत्रफल वाले जिले - 1. हापुड़
2. गाजियाबाद
3. संतरविदास नगर

→ 30 प्र० का गठन - 24 जनवरी 1950

→ 30 प्र० के 13 जिलों को काटकर 9 Nov 2000 में 30 प्र० से अलग उत्तरांचल नामक राज्य बना।

→ 30 प्र० की प्रशासनिक राजधानी - लखनऊ
→ न्यायिक राजधानी - प्रयागराज

→ राजकीय पशु - बारहसिंगा

→ राजकीय पक्षी - सारस / क्रौंच

→ राजकीय पुष्प - पल्लवा / टेंसर

→ राजकीय खेल - हॉकी

→ राजकीय भाषा - हिन्दी (अक्टूबर 1947 में दर्जा तथा 26 Jan 1968 से लागू किया गया। तथा उर्दू को 1989 को दर्जा द्वितीय भाषा रूप।

→ राजकीय चिन्ह - एक वृक्ष में लीर - धनुष तथा दो महलियाँ

→ 2018 में पहली बार 30 प्र० दिवस के रूप के रूप में 24 जनवरी को मनाया गया।

Q. ऐसा कौन सा राज्य है, जो 30 प्र० के सर्वाधिक जिलों को स्पर्श करता है? - M.P.

Q. कौन सा जिला सर्वाधिक राज्यों को स्पर्श करता है? - सोनभद्र

Q. वह कौन सा जिला है जो कि हिमांचल प्रदेश को स्पर्श करता है? - सहारनपुर

Q. वह राज्य जो 30 प्र० को तीन दिशाओं से घेरे हुए है - मध्य प्रदेश

Q. राजकीय पशु - बारहसिंगा

→ 30 प्र० में 18 मण्डल हैं।

→ नवगठित मण्डल - अलीगढ़

→ 30 प्र० में कुल जिले - 75

→ लोक सभा में 30 प्र० के सीट - 80

→ राज्य सभा में 30 प्र० के सीट - 31

→ विधान सभा सीट - 404 [403 सदस्य + 1 मनोनीत] तथा विधान परिषद → 400 सीट

1. सहारनपुर मण्डल — सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर
2. मुरादाबाद मण्डल — बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, अमरौहा, संभल,
3. बरेली मण्डल — बरेली, बदायूँ, शाहजहांपुर, पीलीभीत
4. लखनऊ मण्डल — लखीमपुरखीरी, सीतापुर, हरदोई, रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ
5. देवीपाटन मण्डल — बहराइच, बनरामपुर, भावस्ती, गोंडा
6. गोरखपुर मण्डल — गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, कुशीनगर
7. आजमगढ़ मण्डल — आजमगढ़, मऊ, बालिया
8. वाराणसी मण्डल — वाराणसी, चंदौली, गाजीपुर, जौनपुर
9. मिर्जापुर मण्डल — सन्तरविदासनगर, मिर्जापुर, सोनभद्र
10. इलाहाबाद मण्डल — प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर, प्रतापगढ़

कुछ महत्वपूर्ण जिलों का मुख्यालय =

⇒ जिले	मुख्यालय
सिद्धार्थनगर	नौगढ़
सोनभद्र	राबर्टसगंज
कौशाम्बी	मंसनपुर
अम्बेडकरनगर	अकबरपुर
कानपुर नगर	अकबरपुरभाती
अमेठी	गौरीगंज
संतकबीरनगर	बलीलाबाद
जालौन	अई
संभल	पंचासा
फर्रुखाबाद	फतेहगढ़
कुशीनगर	पडरौना

उत्तर प्रदेश का भौतिक विभाजन -

1. भांगर व तराई क्षेत्र = इस क्षेत्र का विस्तार सहारनपुर से कुरीमगर तक है। भांगर क्षेत्र में कंकड़ - पत्थर अत्यधिक होने के कारण नदी विलुप्त हो जाती है। तथा फसलों के उपर्युक्त क्षेत्र नहीं माना जाता है।
तराई क्षेत्र की मृदा कीचड़ युक्त, दलदली तथा उपजाऊ होती है। इस क्षेत्र से गन्ना तथा धान अधिक उपर्युक्त फसल मानी जाती है।
 2. मध्य का मैदानी क्षेत्र - इस क्षेत्र की मृदा फसलों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है, क्योंकि यहां पर सही मात्रा में जल उपलब्ध हो जाता है।
 3. दक्षिण का पठारी क्षेत्र = इस क्षेत्र का विस्तार उ० प्र० के दक्षिणी सिरे पर है।
क्योंकि यहां पठार पाए जाते हैं, इसलिए यहां नहीं फसल उगाई जा सकती है, जिससे पानी की अधिक आवश्यकता न हो।
- उ० प्र० की जलवायु = उ० प्र० में शीतोष्ण कटिबन्धीय या उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु पायी जाती है।

उ० प्र० का ऋतु :-

- ग्रीष्म ऋतु = उ० प्र० की स्थिति कर्क रेखा के नजदीक होने के कारण मई, जून महीने में सर्वाधिक तापमान पाया जाता है क्योंकि इस महीने में सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा पर पड़ता है।
- बुन्देलखण्ड क्षेत्र कर्क रेखा के सर्वाधिक समीप होने के कारण सबसे गर्म क्षेत्र होता है।
 - सर्वाधिक गर्म जिला - आगरा और झाँसी
 - सर्वाधिक न्यूनतम गर्म जिला - बरेली

वर्षा ऋतु =

गोरखपुर → 30 प्र० का सर्वाधिक वर्षा वाला जिला
मथुरा → 30 प्र० का न्यूनतम वर्षा वाला जिला

→ दक्षिण-पश्चिम मानसून से 75-80% वर्षा होती है।

→ उत्तर-पूर्व मानसून से 15-20% वर्षा होती है।

शरद ऋतु/शीत ऋतु =

30 प्र० → सर्वाधिक ठण्डा महीना जनवरी होता है। क्योंकि 30 प्र० से दूर मकर रेखा पर सूर्य का प्रभाव होने के कारण उत्तरी गोलार्ध में तापमान कम होता जाता है।

उत्तर प्रदेश की मृदा —

भांगर व तराई क्षेत्र	मध्य का मैदानी क्षेत्र	दक्षिण का पठारी क्षेत्र
मृदा = कंकरीली-पथरीली	1. खादर / नवीन जलोढ़ मृदा	1. लाल मृदा
भांगर क्षेत्र की मृदा तथा तराई क्षेत्र में मृदा दलदली कीचड़युक्त तथा उपजाऊ होती हैं। इसका क्षेत्र 30 प्र० के ऊपरी इलाकों में पाया जाता है।	2. बांगर / पुरानी जलोढ़ मृदा	2. परवा मृदा
	3. लवणीय	3. माड़ मृदा
	4. मरुस्थलीय	4. राकड़ मृदा
	5. काली मृदा	5. भोण्टा मृदा
	6. गूड़ मृदा	

1. खादर मृदा — वह मैदानी क्षेत्र जहाँ नदियों का पानी प्रतिवर्ष पहुँचती है। उसे खादर मृदा या नवीन जलोढ़ मृदा कहते हैं।

2. बांगर मृदा — वह मैदानी क्षेत्र जहाँ नदियों का पानी प्रतिवर्ष नहीं पहुँच पाता है। तथा जिससे वहाँ मृदा में कम उपजाऊ होने लगती है। उसे बांगर मृदा कहते हैं।

3. लवणीय मृदा — इसे बंजर / कल्लर आदि नाम से जानते हैं।

4. मरुस्थलीय मृदा — आगरा, मथुरा, अलीगढ़ आदि जिलों में पायी जाती है।

काली मृदा - प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कपास मृदा/रेंगुर मृदा पायी जाती है। काली मृदा को कपास मृदा/रेंगुर मृदा आदि नामों से भी जानते हैं।

शुद्ध मृदा - गंगा - यमुना तथा सहायक नदियों के तट पर पाई जाती है। इसे दोमट / बलुई आदि नाम से जानते हैं।

लाल मृदा - प्रयागराज, झांसी, सोनभद्र, मिर्जापुर, हमीरपुर, जालौन आदि जिलों में पायी जाती है।

परवा मृदा - हल्के भूरे रंग की मृदा होती है।

माड़ मृदा - काली मृदा के समान पश्चिमी जिलों में पायी जाती है।

राकड़ मृदा - लाल - भूरे रंग की मृदा होती है।

भोष्ठा मृदा - लाल - नारंगी रंग की मृदा होती है, जिसका निर्माण विंध्य पहाड़ियों के टूटने के कारण इस मृदा का निर्माण हुआ है।

उ० प्र० - कृषि =

1. रबी फसल - अक्टूबर - दिसम्बर Ex - जेहूं, चना, मटर, सरसों, मसूर
2. जायद फसल - मार्च - अप्रैल Ex - खरबूज, ककड़ी, खीरा आदि
3. खरीफ फसल - मई - जुलाई Ex - धान, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि।

⇒ उत्तर प्रदेश जेहूं, गन्ना, आलू उत्पादन में प्रथम स्थान पर है।

⇒ उत्तर प्रदेश के कुल कृषि योग्य क्षेत्र का लगभग 23% भाग पर जेहूं, 18% भाग पर धान तथा 13% पर गन्ने की खेती की जाती है।

⇒ जेहूं की खेती गंगा - घाघरा के दोआब में सर्वाधिक की जाती है।

⇒ जेहूं उत्पादन में सर्वाधिक उत्पादक जिला गोरखपुर है।

⇒ गन्ना और धान तराई क्षेत्रों में सर्वाधिक की जाती है, जैसे - महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, कुशीनगर आदि जिलों में होती है।

⇒ गन्ना उ० प्र० की सबसे अधिक नगदी फसल होती है।

⇒ अफीम की सर्वाधिक उत्पादन बाराबंकी जिले में होती है। परन्तु अफीम की एक मात्र फैक्ट्री उ० प्र० के गाजीपुर जिले में है।

⇒ मूंगफली — सीतापुर, हरदोई, बदायूँ, स्या आदि जिले में सर्वाधिक होती है।

⇒ कपास — आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस आदि जिलों में सर्वाधिक होती है।

⇒ अमरुद — प्रयागराज, कौशांबी, बरेली, बदायूँ, रामपुर आदि जिलों में सर्वाधिक उत्पादन की जाती है।

⇒ केला — वाराणसी, प्रयागराज, जौनपुर, गोरखपुर आदि जिलों में सर्वाधिक।

⇒ संतरा — सहारनपुर + बुंदेलखण्ड क्षेत्र में।

⇒ लीची — सहारनपुर + मेरठ क्षेत्र में।

⇒ आम — लखनऊ, वाराणसी, सहारनपुर, सीतापुर इत्यादि क्षेत्र में तथा मेरठ और बागपत आम के रटोल प्रजाति के लिए प्रसिद्ध हैं।

⇒ माल्टा — मेरठ, वाराणसी, सहारनपुर क्षेत्र में।

⇒ आलू — फर्रुखाबाद, आगरा, कन्नौज, हाथरस, मेरठ आदि क्षेत्र में।

⇒ आवला — प्रतापगढ़ क्षेत्र में।

⇒ पुष्प — वाराणसी, कन्नौज, मिर्जापुर, जौनपुर क्षेत्र में।

⇒ पान — मधोवा क्षेत्र में।

सर्वाधिक - मथुरा में
न्यूनतम - पीलीभीत में # उ० प्र० के मेले # 70x41 मेला उ० प्र० में - 2250 मेला

प्रयागराज - कुंभ मेला (12 वर्ष में), माघ मेला, शिल्प मेला, त्रिवेणी महोत्सव

वाराणसी - धूपद मेला, रथयाना, नटकटैया मेला, बौद्ध महोत्सव

आगरा - बटेरेश्वर मेला, कैलाश मेला, गणगौर मेला, सुलहकुल महोत्सव
(ऊँच मेला)

बलिया - ददरी मेला (पशु मेला)

सोनभद्र - सोन महोत्सव

मिर्जापुर - कजरी मेला

मैरठ - नौचन्दी मेला

मथुरा - झूला मेला, कंस मेला, गुड़िया मेला, हरिदास जयन्ती, लठमार,
(सर्वाधिक मेला) होलिका महोत्सव

सीतापुर - मैत्रिधारण्य मेला

कुशीनगर - बौद्ध महोत्सव

बांदा - कालिंजर मेला

हापुड़ - गढ़मुक्तेश्वर मेला

बुलन्दशहर - बलसुन्दरी देवी मेला

सहारनपुर - शकम्भरी देवी मेला

बहराइच - सैय्यद सलार मेला

बाराबंकी - देवा शरीफ मेला

अम्बेडकरनगर - गोविन्द साहब मेला

Imp → सुलहकुल मेला को हिन्दू - मुस्लिम एकता का प्रतीक माना जाता है। जो
में मेला लगता है।

अयोध्या = परिक्रमा मेला, रामायण मेला

आगरा — ताजमहल, आगरा का किला, सिकन्दर का मकबरा, ओछा बाई का महल, फतेहपुर सीकरी, बुकंदरवाजा

झांसी — झांसी का किला, लक्ष्मीबाई महल

चित्तकूट — सती अनुसुइया आश्रम, राम धाट, हनुमान बाड़ा, गुप्त गोदावरी

प्रयागराज — आनन्द भवन, जवाहर नक्षत्रशाला, चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क,

मनकामेश्वर मन्दिर, नागवासुकी मन्दिर, त्रिवेणी संगम,

लेटे हनुमान जी का मन्दिर, इलाहाबाद म्यूजियम

लखनऊ — बड़ा इमाम बाड़ा, छोटा इमाम बाड़ा, जनेश्वर मिश्र पार्क, बेगम हजरत...

महल पार्क, अम्बेडकर पार्क, राम भगोहर बोडिया पार्क

वाराणसी — काशी विश्वनाथ धाम, संकटमोक्ष मन्दिर, भारत माता मन्दिर, साहनाथ, बौद्ध संग्रहालय, बौद्ध प्रतिमा, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

ललितपुर — दशावतार मन्दिर

मथुरा — प्रेम मन्दिर, शारिकाधीश मन्दिर, अइस्कॉन मन्दिर,

रटा — अतर-जीयेडा

मिर्जापुर — विद्याचल देवी धाम मन्दिर, चुनार का किला

सीतापुर — महर्षि दधीचि ऋषि आश्रम, त्रैलोक्य मन्दिर

कुरीनगर — रायनमुद्रा बौद्ध प्रतिमा

- कानपुर — भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, नेशनल सुगर रिसर्च इंस्टीट्यूट
झाँसी — चारागाह व चारा अनुसंधान संस्थान
नौसडा — वी० वी० गिरी नेशनल लेवर इंस्टीट्यूट
सहारनपुर — स्कूल ऑफ पेपर टेक्नोलॉजी
मेरठ — आलू अनुसंधान केन्द्र
बरेली — इन्जलत नगर मे केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान केन्द्र पशु चिकित्सा
अनुसंधान संस्थान
मथुरा — बकरी अनुसंधान संस्थान
वाराणसी — शाकभाजी अनुसंधान संस्थान, भारतीय दृष्टिक्रम तकनीक संस्थान
तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान
लखनऊ — गन्ना अनुसंधान केन्द्र, वीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ फेलियोबॉली
विष अनुसंधान संस्थान, औषधि संस्था संस्थान, केन्द्रीय उपोष्ण
बागवानी संस्थान, नेशनल बोटनिकल गार्डन
भदोही — कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान
बुलन्दशहर — केन्द्रीय ग्लोबल एवं सिरेमिक अनुसंधान संस्थान
(युर्मा)

उ० प्र० → गंगा - २४ जिला
यमुना - १९ जिला

उ० प्र० की नदी

→ उ० प्र० की मुख्य नदी - गंगा, यमुना, घाघरा

हिमालयी नदी		मैदानी नदी	पठारी नदी
१. गंगा	५. घाघरा	१. गोमती नदी	१. चम्बल नदी
२. यमुना	६. गण्डक	२. सरई नदी	२. बेतवा नदी
३. रामगंगा	७. हिण्डन	३. याण्डो नदी	३. सोन नदी
४. राप्ती		४. ईशान नदी	४. केन नदी
		५. पीली नदी	५. टोंस नदी

गंगा नदी - उ० प्र० की सबसे बड़ी नदी है, इसकी ल० १४५० Km है, यह उ० प्र० के २४ जिलों से होकर गुजरती है।
गंगा नदी गंगोत्री ग्लेशियर से निकलकर बिजनौर के रास्ते उ० प्र० में प्रवेश करती है, तथा बलिया से होते हुए बिहार राज्य में चली जाती है।

गंगा के किनारे → बिजनौर, कन्नौज, प्रयागराज, कानपुर, मिर्जापुर, वाराणसी, बसे शहर, बुलन्दशहर

यमुना नदी - यह नदी उत्तराखण्ड के यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलकर उ० प्र० में सहारनपुर से प्रवेश कर १९ जिलों से तथा १३७६ Km की ल० से प्रयागराज में गंगा नदी के साथ मिल जाती है।

यमुना नदी के किनारे बसे शहर - मथुरा, आगरा, जालौन, हमीरपुर इत्यादि।

रामगंगा नदी = यह नदी उत्तराखण्ड के पौड़ी जिले में स्थित इधारोली पर्वत से निकलकर बिजनौर से होते हुए उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है तथा कन्नौज के पास गंगा नदी के साथ मिल जाती है।

हिण्डन नदी - यह नदी गौतम बुद्ध नगर में यमुना नदी से मिल जाती है।

गोमती नदी =

यह नदी पीलीभीत के फुल्हर झील से निकलकर गाजीपुर के निकट कैथी नामक स्थान पर गंगा नदी के साथ मिल जाती है। गोमती नदी के तट पर बसे मुख्य जिले - लखनऊ, सुल्तानपुर, जौनपुर इत्यादि।

शारदा नदी =

यह नदी उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले के कालापानी नामक स्थान से निकलकर सीतापुर में घाघरा नदी के साथ मिल जाती है।

घाघरा नदी =

यह हिमालयी नदी तिब्बत के पछार के पास स्थित मापचा चुंगो हिमनद से निकलकर नेपाल की सीमा से होते हुए (लखीमपुर) तथा बहराइच की सीमा बनाते हुए सीतापुर में शारदा के साथ मिलती है यह नदी आगे बढ़कर देवरिया के बरहद नामक स्थान पर राप्ती नदी के साथ मिल जाती है। आगे बढ़कर यह दूधरा में गंगा नदी के साथ मिल जाती है।

गण्डक =

यह नदी नेपाल के साल्गीग्राम नामक स्थान से निकलकर महाराजगंज व कुशीनगर की सीमा पर बहते हुए बाहर निकलकर बिहार के पटना में गंगा नदी के साथ मिल जाती है।

यमुना = मध्य प्रदेश के इंदौर के जनापाव पहाड़ी से निकल कर राजस्थान तथा म.प्र. की सीमा से होते हुए उ.प्र. में प्रवेश करती है तथा इलाहाबाद के पास यमुना नदी के साथ मिल जाती है।

बेतवा नदी :- मध्य प्रदेश के भोपाल से निकलकर ललितपुर से होते हुए उ.प्र. राज्य में प्रवेश करती है तथा हमीरपुर में यमुना नदी के साथ मिल जाती है।

केन :- मध्य प्रदेश के कैमूर नामक पहाड़ी से निकलकर बांदा से होते हुए उ.प्र. में प्रवेश करती है तथा बांदा में ही यमुना के साथ मिल जाती है।

सोन नदी =

अमरकंटक पहाड़ी से निकलकर सोनभद्र होते हुए उ.प्र. से नालंदा निकल जाती है।

उ० प्र० की जनजातियाँ

- भारत की कुल अनुसूचित जनसंख्या का ५.०९% उ० प्र० में निवास करता है।
- उ० प्र० की कुल जनसंख्या का ०.६% अनुसूचित जनजाति हैं।
- जनसंख्या के अनुसार सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति वाला जिला सीतापुर है।
- न्यूनतम अनुसूचित जनजाति वाला जिला अयोध्या व जालौन है।
- थारु जनजाति के लिए २०८५-१९८० थारु विकास परियोजना लागू की गयी। थारु जनजाति दीपावली को शोक पर्व के रूप में मनाती है।
- थारु जनजाति के विकास हेतु लखीमपुर खीरी में विश्व विद्यालय की स्थापना की गयी है। थारु जनजाति में बहला-विवाह प्रचलित है।
- जनसंख्या के दृष्टिकोण से उ० प्र० की सबसे बड़ी जनजाति गोंड है।
- थारु जनजाति और बुक्सा जनजाति कमरा: गोरखपुर तथा आगरा & बिजनौर जिले में सर्वाधिक पाया जाता है।
- संविधान के अनुसार सर्वप्रथम बुक्सा, भोड़िया, जौनसारी, थारु तथा राजी को शामिल किया गया था सन् २००३ में ५० अन्य जनजातियों को ३१ में दर्जा प्रदान किया गया।

जिला	अनुसूचित जनजाति
→ सोनभद्र	भुइया, चेरो, पटारी, अगरिया, पांखा, बैगा, सहरिया
→ वाराणसी	चेरो
→ ललितपुर	सहरिया
→ देवरिया, गाजीपुर, वाराणसी, सोनभद्र, बलिया	खरवार / चैरवार
→ महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, सिधार्थनगर, वाराणसी, जौनपुर, सोनभद्र	नायक, ओझा, गोंड, राजगोंड, धुरिया, बैगा

उ०प्र० के प्रमुख उद्योग

- सहारनपुर — लकड़ी की नक्काशी, कागज उद्योग, लोहे के बाट उद्योग
- लखनऊ — जरी-जरदोशी व चिकन-कढ़ाई के लिए
- कानपुर — चमड़ा उद्योग व कम्बल निर्माण उद्योग
- आगरा — चर्म उद्योग केन्द्र, पैठा-दालमोठ
- वाराणसी — हथकरघा उद्योग, रेशम सिल्क उद्योग
- फिरोजाबाद — कांच उद्योग, चूड़ी उद्योग
- बरेली — सूरमा, फर्नीचर, दिया-सलाई
- भदोही — कालीन उद्योग
- मौदी नगर (गाधियाबाद) — सिगरेट निर्माण उद्योग, बिस्कुट निर्माण उद्योग
- बुलन्दशहर — चीनी मिट्टी बर्तन उद्योग (युर्बा)
- प्रतापगढ़ — आंवला उद्योग
- मिर्जापुर — संगमरमर उद्योग
- चिलकूट — मिट्टी के बिल्लेने
- मैरठ — खेल के सामान, वार्निश (रंग), केंची उद्योग
- मुरादाबाद — पीसिले पाल उद्योग
- अलीगढ़ — ताला व हार्डवेयर
- पीलीभीत — बांसुरी उद्योग

एक जिला एक उत्पाद योजना

सहारनपुर - काष्ठ शिल्प

औरिया - घी

अलीगढ़ - ताला

अमरोहा - ढोलक

आगरा - चमड़ा उद्योग

कानपुर - चमड़ा

कन्नौज - इत

बुलन्दशहर - कांच

फिरोजाबाद - धुड़ी

रायपुर - चाकू

संत कबीर नगर - पीसल के बर्तन

गोरखपुर - टैरा कोटा

चितकूट - लकड़ी के बिलौने

जालौन - हस्त निर्मित कागज

जौनपुर - ऊनी दरी

मिर्जापुर - कलीन

लखनऊ - चिकन - करी और बरी
अरदोछी

मैरठ - खेल का सामान

हरदोई - हथकरघा

हाथरस - टींग

मथोबा - पान की येती

पक्षी विहार

उन्नाव	—	नबाबगंज पक्षी विहार (सबसे पुराना पक्षी विहार वर्तमान नाम - चन्द्रशेखर आज़ाद पक्षी विहार)
गौतम बुद्ध नगर	—	ओखला पक्षी विहार
कन्नौज	—	लाख बटोरी पक्षी विहार (सबसे बड़ा पक्षी विहार)
आगरा	—	सूर सरोवर पक्षी विहार
अलीगढ़	—	शेखा पक्षी विहार (सबसे छोटा पक्षी विहार) राष्ट्रीय पक्षी विहार
मैनपुरी	—	समाम पक्षी विहार
रायबरेली	—	समसपुर पक्षी विहार
प्रतापगढ़	—	डा० श्रीमराव अम्बेडकर पक्षी विहार
बलिया	—	जय प्रकाश नारायण पक्षी / (सुरहाताल) विहार (पुराना नाम)
संतकबीर नगर	—	बखीरा पक्षी विहार
हरदोई	—	सांडी पक्षी विहार
रूठा	—	फरना पक्षी विहार (सबसे छोटा पक्षी विहार)

उ०प्र० का वन्य जीव विहार

पंदौली	—	चन्द्रप्रभा वन्य जीव विहार (राज्य का प्रथम वन्य जीव विहार)
बहराइच	—	कतरनिया घाट वन्य जीव विहार
चितकूट	—	रानीपुर वन्य जीव विहार
लखीमपुर	—	किशनपुर वन्य जीव विहार
पीलीभीत	—	पीलीभीत वन्य जीव विहार
ललितपुर	—	महावीर स्वामी वन्य जीव विहार (सबसे छोटा)
आगरा, औरैया इटावा	—	चम्बल वन्य जीव विहार
मिर्जापुर, सोनमध	—	कैमूर वन्य जीव विहार
मैरठ	—	हस्तिनापुर वन्य जीव विहार (सबसे बड़ा)
महाराजगंज	—	सोहागी बरबा वन्य जीव विहार
भाकस्ती, बलरामपुर	—	सुहेलवां वन्य जीव विहार

उ०प्र० का पक्षी वन्य जीव विहार

- रायबरेली - समसपुर विहार
गोण्डा - पार्वती अरणा
अलीगढ़ - शेखा पक्षी विहार - (राष्ट्रीय पक्षी विहार)
- * राज्य में एक मात्र राष्ट्रीय उद्यान - दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (लखीमपुर खीरी)
- * राज्य में तीन प्राणी उद्यान केन्द्र हैं। जिनका नाम -
1. नबाव वाजिद अली शाह प्राणी उद्यान केन्द्र (तिनली पार्क) लखनऊ
 2. कानपुर जूलॉजिकल पार्क, कानपुर
 3. शहीद अशफाक उल्लाखान प्राणी उद्यान केन्द्र, गोरखपुर

* भालुओं का पुनर्वास केन्द्र - मथुरा

⇒ घड़ियाल संरक्षण केन्द्र - लखनऊ

→ कटुआ अभयारण्य केन्द्र - वाराणसी

→ लायन सफारी / बब्बर शेर सफारी पार्क - राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य, इटावा

→ स्लीफेंट सफारी पार्क - राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य, इटावा

→ नाइट सफारी पार्क - नौरडा

CHANDAN KUMAR